बुद्धवर्ष 2551, आश्विन पूर्णिमा, 25 अक्तूबर, 2007 वर्ष 37 अंक ४	वार्षिक शुल्क रु. 30/- आजीवन शुल्क रु. 500/-

For Patrika in various languages, visit: **www.vri.dhamma.org/newsletters**

धम्मवाणी

जीरन्ति वे राजरथा सुचित्ता, अथो सरीरम्पि जरं उपेति।
सतञ्च धम्मो न जरं उपेति, सन्तो हवे सब्भि पवेदयन्ति॥

धम्मपद- १५१, जरावग्गो

रंग-बिरंगे सुचित्रित राजरथ जीर्ण हो जाते हैं और यह शरीर भी जीर्णता को प्राप्त हो जाता है। (परंतु) संतों (बुद्धों) का धर्म जीर्ण नहीं होता (तरोताजा बना रहता है)। संतजन (बुद्ध) संतों से ऐसा (ही) कहते हैं।

(बुद्ध-चारिका)

निस्संदेह बुद्ध बनेगा

"भंते, भगवान, पधारिए!

सम्यक संबुद्ध का स्वागत है!

तथागत दीपंकर का शुभागमन है!"

झांझरों की झंकारों और शंखों की सामूहिक ध्वनियों के साथ विशाल भिक्षुसंघ सहित सम्यक संबुद्ध के स्वागत में यह तुमुलघोष निनादित हो उठा।

ब्राह्मण तापस सुमेध ने देखा, सचमुच भगवान दीपंकर संघ के साथ बहुत समीप पहुँच चुके हैं। तब तक वह अपना काम पूरा नहीं कर सका था। मार्ग पर अभी एक-दो हाथ जमीन पर सूखी रेत नहीं बिछा पाया था। वहां अभी भी कीचड़ था। भगवान को कीचड़ पर से चलना होगा। क्या करे? उसे तत्काल एक युक्ति सूझी। उसने अपने शरीर पर लिपटे हुए मृगचर्म को खोला और उस कीचड़ पर बिछा दिया। परंतु देखा कि कीचड़ की गहराई अधिक है। केवल मृगचर्म बिछा देने से काम नहीं चलेगा। भगवान इस पर चलेंगे तो यह कीचड़ में धँस जायगा। इससे भगवान को चलने में कष्ट होगा।

तब एक और युक्ति सूझी। वह कीचड़ पर बिछाये हुए मृगचर्म पर स्वयं औंधेमुँह लेट गया, जिससे कि भगवान उसकी पीठ पर कदम रख कर आगे बढ़ जायँ। न उनके पांव कीचड़ में धँसें और न उन्हें कोई कष्ट हो।

तापस सुमेध ब्राह्मण रम्मावती नगरी से गुजरता हुआ आगे जा रहा था। वह इस नगरी के लिए सर्वथा अपरिचित था। वहां से गुजरते हुए उसने देखा कि लोग अत्यंत प्रफुल्लित चित्त से किसी के आगमन की तैयारी में जुटे हैं। बाहर से नगरी में आने का मार्ग ऊबड़-खाबड़ था। रात जोरों की वर्षा हुई तब वह और अधिक बिगड़ गया और कीचड़ से लथपथ हो गया। सुखपूर्वक चलने लायक नहीं रहा। नगर-निवासी समीप से टोकरियों में सूखी रेत भर-भर कर टूटे-फूटे मार्ग की मरम्मत करने में लगे थे। उसे समतल बना रहे थे। कीचड़ पर सूखी रेत डाल-डाल कर उसे चलने लायक बना रहे थे।

आगंतुक सुमेध ने पूछा कि यह सब क्यों हो रहा है? उसे बताया गया कि पड़ोस के रम्मक नामक नगर से भिक्षुसंघ सहित भगवान दीपंकर सम्यक संबुद्ध यहां पधार रहे हैं। वे आज इस नगरी में भोजन के लिए आमंत्रित हैं। रात की वर्षा से मार्ग चलने लायक नहीं रह गया, इसलिए लोग इसे सुधारने में लगे हैं।

तपस्वी सुमेध ने जब यह सुना तब वह भी भावुक होकर उस नगरी के लोगों से अनुमति लेकर मार्ग के एक भाग की मरम्मत करने में लग गया। टोकरी में सूखी रेत भर-भर कर मार्ग पर बिछाने लगा। लेकिन काम पूरा होने के पूर्व ही भगवान संघसहित पधार गये। तब स्वयं कीचड़ में लेटने के सिवाय उसके पास और कोई उपाय नहीं था।

कीचड़ पर लेटे-लेटे वह यह शिवसंकल्प कर रहा था कि भगवान दीपंकर के समान वह भी सम्यक संबुद्ध बने, जिससे कि केवल अपनी ही मुक्ति न साधे, बल्कि अनेकों की भवमुक्ति में भी सहायक बन सके।

भगवान दीपंकर जब समीप आये और देखा कि तपस्वी युवक कीचड़भरे पथ पर उनकी ओर हाथ जोड़े औंधेमुँह लंबा लेटा है, तब यह देख कर उन्होंने उस युवक की उस समय की मनोस्थिति जानी। सम्यक संबुद्ध त्रिकालज्ञ होते हैं। उन्होंने तत्क्षण जान लिया कि इस भावविभोर युवक ने विगत अनेक जन्मों में इतनी मात्रा में पारमिताएं परिपूर्ण कर ली हैं जिनसे कि वह इसी जीवन में जीवनमुक्त अरहंत बनने की क्षमता रखता है। इस जीवन में भी गंभीर तपस्या द्वारा इसने आठों ध्यान समापत्तियां उपलब्ध कर ली हैं। इस समय विपश्यना साधना मिल जाय तो यह अभी अल्पकाल में ही अरहंत अवस्था प्राप्त कर भवसंसरण से सर्वथा विमुक्त हो सकता है। आठों ध्यानों से प्राप्त हुए अभिज्ञान द्वारा तापस सुमेध भी इस तथ्य को भलीभांति समझ रहा था,

परंतु स्वयं भवमुक्त अरहंत बनने में उसकी रंचमात्र भी रुचि नहीं थी। उस क्षण वह यही संकल्प कर रहा था कि मुझे अकेले को मुक्ति नहीं चाहिए। मैं इन भगवान दीपंकर की भांति सम्यक संबुद्ध बन कर अनेकों की मुक्ति में सहायक बनूं। उसकी यह धर्मकामना थोथे भावावेश के आधार पर नहीं थी। वह स्वयं भी खूब समझता था कि सम्यक संबुद्ध बनने में कितनी विशद मात्रा में पारमिताएं संचित-संगृहीत करनी होती हैं। इसके लिए अनगिनत कल्पों तक अनगिनत कष्टमय जीवन जीने होंगे। यह जानते हुए भी वह इन कष्टों को झेलने के लिए कृतसंकल्प था। उसकी यह मनोदशा जान कर भगवान ने उसका भविष्य देखा और उसके सम्यक संबुद्ध बन सकने की संभावना देख कर उसे आशीर्वचन देते हुए यह भविष्यवाणी की कि चार असंख्य और एक लाख कल्पों में आवश्यक पारमिताएं पूरी करके किसी एक भद्रकल्प में वह सिद्धार्थ गौतम के नाम से सम्यक संबुद्ध बनेगा। निस्संदेह बुद्ध बनेगा।

धुवं बुद्धो भविस्ससि। – *(बुद्धवंस २.८३-१०७)*

उनकी यह मंगलमयी घोषणा पृथ्वी और अंतरिक्ष में गूंज उठी और देर तक इसकी प्रतिध्वनि होती रही।

इसी समय सुमित्रा नामकी एक धर्ममयी ब्राह्मणी पुत्री तापस सुमेध को देख कर उसकी ओर आकर्षित हुई। वह भगवान दीपंकर को भेंट देने के लिए कमल के आठ फूल लायी थी। उनमें से पांच तापस सुमेध को दिये और तीन अपने लिए रखे। तब उसने यह धर्मसंकल्प किया कि जब यह युवक भिन्न-भिन्न जन्मों में पारमिताएं पूरी करने में संलग्न रहेगा, तब मैं इसकी सहधर्मिणी बनूं और इसके अंतिम जीवन में भी इसकी अर्धांगिनी ही बनूं। भगवान दीपंकर ने उसकी भी मनोदशा जानी और उसका भविष्य देख कर आशीर्वाद दिया कि यही होगा। जन्म-जन्मांतरों तक साथ निभाती हुई इस बोधिसत्त्व के अंतिम जीवन में भी तुम यशोधरा नाम से इसकी अर्धांगिनी बनोगी और इससे विपश्यना साधना सीख कर भवमुक्त अरहंत अवस्था प्राप्त करोगी।

सचमुच अपने इस शुभ संकल्प से और भगवान दीपंकर की आशीर्वादमयी भविष्यवाणी से तापस सुमेध बोधि का बीज धारण कर **'बोधिबीज'** कहलाया, उसके मानस में बोधि अंकुरित हो जाने के कारण **'बुद्धांकुर'** कहलाया और इसीलिए **'बोधिसत्त्व'** भी कहलाया।

गर्भाधान-स्वप्न

तपस्वी सुमेध ब्राह्मण, सम्यक संबुद्ध भगवान दीपंकर के आशीर्वचन और भविष्यवाणी के अनुसार असंख्य कल्पों में असंख्य जन्म लेते हुए निश्चित समय पर निश्चित मात्रा में दस पारमिताएं (भव-पार उतरने के लिए परम योग्यताएं) परिपूर्ण करके देवलोक में श्वेतकेतु देव के नाम से जन्मा।

दस पारमिताएं ये हैं –

दान, शील, निष्क्रमण, प्रज्ञा, वीर्य, क्षांति, सत्य, अधिष्ठान, मैत्री और उपेक्षा।

इन्हें आवश्यक मात्रा में पूरा कर लेने के कारण अब उसका अगला जन्म अंतिम होगा, जिसमें सम्यक संबोधि प्राप्त कर भवसंसरण से सर्वथा विमुक्त हो जायगा।

अगले जन्म के लिए उसने उचित समय, स्थान, कुल, गोत्र आदि का चुनाव किया और उचित माता के गर्भ में प्रवेश करने का निश्चय किया।

उस समय शाक्यराज शुद्धोदन की महारानी महामाया सुख-शांतिपूर्वक राज्य के शयनकक्ष में शयन कर रही थी। निद्रित अवस्था में उसने एक स्वप्न देखा –

"एक अत्यंत सुंदर श्वेत हाथी ने अपनी सूंड में सुंदर श्वेत कमल लिए हुए उसके कक्ष में प्रवेश किया और उसकी शैया की तीन बार परिक्रमा करके वह श्रद्धाविनत हो बैठ गया। फिर नमस्कार करके, दाहिनी ओर से उसके शरीर में प्रवेश कर, उसकी कोख में समा गया।"

यह बोधिसत्त्व का अंतिम गर्भशयन था।

गर्भ के दौरान महामाया कामभोगों से सर्वथा विरत रह कर सभी शीलों का पालन करती रही और श्रमण परंपरा के अनुसार सभी प्रकार के पूजन-प्रार्थना के कार्यों से विरत रही। उसने दस माह तक कुशलतापूर्वक गर्भ का परिपालन किया।

जन्म

गर्भ के दस महीने पूरे होने पर महारानी महामाया ने अपने पीहर देवदह जाने की इच्छा व्यक्त की। महाराज शुद्धोदन ने स्वीकृति प्रदान की। आठ श्वेत घोड़ों के एक आरामदेह रथ में महारानी के साथ बैठ कर उसे विदा करने के लिए आध योजन तक स्वयं गये। वहां जाकर महारानी को पालकी में बैठा दिया और स्वयं कपिलवस्तु लौट आये। महारानी के साथ अनेक मंत्री और दास-दासियां थीं।

देवदह पहुँचने के पहले राह में सुंदर फूलों से लदा हुआ लुंबिनी का शालवन पड़ता था। वहां पहुँच कर महारानी का मन हुआ कि वह पालकी से उतर कर वन की नैसर्गिक सुषमा का आनंद ले। उसने यही किया। कुछ देर टहलने के बाद उसने सुंदर फूलों से लदी हुई एक वृक्ष की डाल देखी। डाल को दाहिने हाथ से पकड़ कर उसे जैसे ही अपनी ओर खैंचा वैसे ही उसे गर्भ-उत्थान हुआ। सेवकों ने जल्दी-जल्दी कनात लगा कर स्थान को घेर दिया और अलग हो गये। दासियां महारानी की सेवा में लग गयीं।

थोड़े ही समय में शिशु का जन्म हुआ। आगे जाकर बालक ने ये घोषणाएं[१] कीं –

१. (दीघनिकाय २.१.३१)

नये उत्तरदायित्व

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

आचार्य

१-२. श्री गोपालशरण एवं श्रीमती पुष्पा सिंह, लखनऊ – धम्मलक्खन, लखनऊ तथा धम्मसुवत्थि, श्रावस्ती के अतिरिक्त – धम्मसलिल, देहरादून; धम्मलिच्छवी, वैशाली; धम्मबोधि, बोधगया; के साथ बिहार राज्य की धम्मसेवा.

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१-२. श्री सुशीलकुमार एवं श्रीमती वीणा मेहरोत्रा, वाराणसी – धम्मसलिल, देहरादून एवं धम्मचक्क, सारनाथ की सेवा में नियुक्त क्षेत्रीय आचार्य की सहायता.

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्रीमती मनोरमा तिवारी, उरई-लखनऊ

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१-२. श्री विनोदकुमार एवं श्रीमती सुधा चिरीपाल, कोलकाता
३. श्री भारद्वाज जयराम दास, हिसार, हरियाणा
४. श्री देवव्रत दत्त, खरदाह, प० बंगाल
५. सुश्री शशि कमल, जयपुर
६. श्री महेशदत्त शर्मा, जयपुर
७. श्रीमती चारुलता राय, राजकोट
८. श्रीमती जयश्री समीर शेलात, अहमदाबाद
९-१०. श्री दिनेश एवं श्रीमती शोभना शाह, अहमदाबाद
11. Mrs. Tai, Ming Chiao (Wendy), *Taiwan*
12. Mrs. Weng Hsiu-Yueh, *Taiwan*
13-14. Mr. David & Mrs. Line Lander, *Germany*

बालशिविर-शिक्षक

१. श्री संजय दवे, वडोदरा
२. श्रीमती नयना शाह, वडोदरा
३. श्रीमती मीनाक्षी ठक्कर, वडोदरा
४. सुश्री कृष्णा शर्मा, अंकलेश्वर
५. श्री हितेंद्र संघवी, कच्छ
६. सुश्री कादंबरी सावलिया, कच्छ
७. श्री अरुण चौहान, गुजरात
८. श्री पोपट अहिरे, मनमाड
९. कु. समीक्षा अहिरे, मनमाड
१०. श्रीमती प्रतिभा गांगुर्डे, मनमाड
11. Mr. Chhun Phieu, *Cambodia*
12. Mr. Say Sen, *Cambodia*
13. Mrs. Sokhom Non, *Cambodia*
14. Mrs. Seng Huot Suos, *Cambodia*
15. Mrs. Krapum Katherine Chey, *Cambodia*
16. Ms. Sim Phieu, *Cambodia*
17. Ms. Kim Chhy Huy, *Cambodia*

१. **अग्गोहमस्मि लोकस्स** – मैं लोक में अग्र हूं।

२. **जेट्ठोहमस्मि लोकस्स** – मैं लोक में ज्येष्ठ हूं।

३. **सेट्ठोहमस्मि लोकस्स** – मैं लोक में श्रेष्ठ हूं।

यह सत्य वचन थे क्योंकि उस समय दसों पारमिताओं को इतनी मात्रा में पूर्ण कर लिया हुआ अन्य कोई व्यक्ति, किसी लोक में भी नहीं था। अतः वह प्राणियों में अग्र था, ज्येष्ठ था, श्रेष्ठ था।

उसने फिर यह भी घोषणा की –

४. **अयमन्तिमा जाति** – यह मेरा अंतिम जन्म है।

५. **नत्थिदानि पुनब्भवोति** – अब और जन्म नहीं होगा।

ये भी सत्य घोषणाएं ही थीं।

सद्धर्म-पथिक,

स. ना. गो.

धम्मगिरि पर पालि-अंग्रेजी कोर्स

धम्मगिरि पर ८ महीने का अंग्रेजी भाषा में पालि-प्रशिक्षण शिविर चलता है जिसमें पालि की प्रारंभिक पढ़ाई होती है। अगला सत्र फरवरी २००८ में प्रारंभ होगा, जो ३१ अक्टूबर, २००८ तक चलेगा।

प्रवेश-योग्यता – जिन्होंने कम-से-कम पांच दस-दिवसीय शिविर और एक सतिपट्ठान शिविर किया हो, विगत दो वर्ष से नियमित साधना करते हों, विपश्यना विधि के प्रति पूर्णतया समर्पित हों और पांचों शीलों का कड़ाई से पालन कर सकते हों – **क्षेत्रीय आचार्य** द्वारा अनुमोदन करवा कर अपना आवेदन-पत्र भेज सकते हैं। आवेदन-पत्र – Website: www.vri.dhamma.org पर उपलब्ध है। वहां से ले करके भरें अथवा 'विपश्यना विशोधन विन्यास', धम्मगिरि से मँगा कर भरें और क्षेत्रीय आचार्य के हस्ताक्षर करवा कर ही भेजें। अन्यथा उसे अवैध माना जायगा और कोई उत्तर नहीं दिया जायगा।

वर्ष २००८ में **उच्च पालि शिक्षा (Advance Pali Course)** की पढ़ाई प्रारंभ होगी, जिसके लिए प्रारंभिक पालि सत्र पास होना आवश्यक होगा। यह सत्र भी फरवरी २००८ में आरंभ होकर, ३१ अक्टूबर, २००८ तक चलेगा।

फार्म व अधिक जानकारी के लिए **संपर्क** – व्यवस्थापक, 'विपश्यना विशोधन विन्यास', धम्मगिरि, इगतपुरी- ४२२४०३.

"जी" टी.वी. पर धारावाहिक 'ऊर्जा'

पूज्य गुरुदेव के साथ की गयी प्रश्नोत्तरी **"ऊर्जा"** नामक शीर्षक से "जी" टीवी पर अब **सोमवार से गुरुवार** तक **प्रातः ४:३० बजे** या उनकी सुविधानुसार प्रसारित होती है। इसमें पूज्य गुरुदेवजी 'धर्म' की बारीकियों को विस्तार से समझाते हैं। जिज्ञासु इसका लाभ उठा सकते हैं।

पूज्य गुरुजी का प्रवचन 'हंगामा' टीवी चैनल पर

प्रतिदिन प्रातः ४:३० से ६ बजे तक पूरा प्रवचन एक साथ प्रसारित किया जा रहा है। साधक अपने ईष्ट-मित्रों एवं परिजनों सहित इसका लाभ उठा सकते हैं।

आस्था टी. वी. चैनल पर पूज्य गुरुजी का प्रवचन

आस्था टी.वी. चैनल पर पूज्य गुरुजी के हिंदी में प्रवचन **प्रतिदिन प्रातः ९:४५** बजे प्रसारित हो रहे हैं।

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03

विपश्यना केंद्रों की प्रगति

धम्मपाल, भोपाल (म.प्र.)

धम्मपाल, भोपाल विपश्यना केंद्र सांची के विश्व विख्यात स्तूप से मात्र ४५ किमी. की दूरी पर स्थित है। यहां पर निर्माण कार्य लगभग ४० प्रतिशत तक पूरा हो चुका है। शेष कार्य मार्च २००८ तक पूरा करने का संकल्प है। इतना कार्य पूर्ण होने पर २५ महिलाएं एवं ४० पुरुषों के लिए ध्यान करना सुगम हो जायगा। जो साधक इस पुण्यक्षेत्र में भाग लेना चाहें वे निम्न पते पर संपर्क कर सकते हैं – **म० प्र० विपश्यना समिति**, **संपर्कः** दूरभाष- क्र. ०७५५-२४६२३५१ तथा मो. ०९३०३१३१०९६ या ९४२५३०२५९०. (समिति को आयकर की धारा ८०-जी के अंतर्गत छूट प्राप्त है।)

धम्मसरोवर, धुळे (महाराष्ट्र)

धुळे विपश्यना केंद्र पर **पगोडा** निर्माण का कार्य प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त कुछ आवश्यक निवासादि भी बन रहे हैं।

खान्देश विपश्यना साधना केंद्र, गेट नं. १६६, डेडरगांव जलशुद्धिकरण केंद्र के पास, मु. पो. तिखी, जिला- धुळे, पिनः ४२४००२; फोनः (०२५६२) २५५२२२. जो साधक इस पुण्यक्षेत्र में भाग लेना चाहें वे निम्न पते पर संपर्क कर सकते हैं – **संपर्कः** कार्यालयः खान्देश विपश्यना विश्वस्त मंडल, C/o डॉ. देवरे, ८६, आदर्श कॉलोनी, इंदिरा गार्डन के पीछे, देवपुर, धुळे-४२४००२. फोनः २२२८६१, २२४१६८, २२९६३२, २०२७३७. Email: info@sarovara.dhamma.org (केंद्र को आयकर की धारा ८०-जी के अंतर्गत छूट प्राप्त है।)

धम्ममरुधरा, जोधपुर (राजस्थान)

इस केंद्र पर शिविर-संचालन हेतु आवश्यक निर्माण कार्य प्रगति पर है। स्थान बहुत ही आकर्षक क्षेत्र में ध्यान के अति अनुकूल है।

विपश्यना साधना केंद्र, लहरिया रिसोर्ट के पीछे, चौपासनी, जोधपुर-३४२००९. जो साधक इस पुण्यक्षेत्र में भाग लेना चाहें वे निम्न पते पर संपर्क कर सकते हैं – **संपर्कः** श्री नेमीचंद भंडारी, २६० 'मयूर', चौथी बी-रोड, सरदारपुरा, जोधपुर-३४२००३. फोनः (०२९१) २४३२०४८, २६३७३३०. मो.: ०९३१४७-२७२१५. Email: info@mayurexports.com (केंद्र को आयकर की धारा ८०-जी के अंतर्गत छूट प्राप्त है।)

दोहे धर्म के

श्रद्धा जागी बुद्ध पर, चलूं बोधि के पंथ।
बोधि जगाऊं स्वयं की, मंगल मिले अनंत॥

श्रद्धा जागी धर्म पर, चलूं धर्म के पंथ।
सब पापों का हनन कर, बनूं स्वयं अरहंत॥

श्रद्धा जागी संत पर, बढ़ूं शांति के पंथ।
शांति समाये चित्त में, होय दुखों का अंत॥

श्रद्धा तो जागे मगर, छूटे नहीं विवेक।
श्रद्धा और विवेक से, मंगल जगे अनेक॥

श्रद्धा तो जागे मगर, अंध न बनने पाय।
प्रज्ञा ज्ञान प्रदीप की, ज्योति नहीं बुझ जाय॥

एक एक दिन बीतते, जीवन होय अशेष।
बिना अथक पुरुषार्थ के, कर्म न होय अशेष॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

चालत-चालत धरम पथ, चित्त बिमल जदि होय।
तो सम्यक संबुद्ध री, सही बंदना सोय॥

या हि बुद्ध री बंदना, यो हि बुद्ध सम्मान।
प्रग्या करुणा प्यार स्यूं, भरल्यां तन मन प्राण॥

या हि बुद्ध री बंदना, अरहत हेत प्रणाम।
द्वेस द्रोह सारा छुटै, चित्त हुवै निस्काम॥

आ ही साची बंदगी, नमस्कार परणाम।
जीवन जीऊं धरम रो, करूं न कूड़ा काम॥

ई स्रद्धामय नमन स्यूं, चित्त बिमल हो ज्याय।
अहंकार सारो मिटै, बिनयभाव भर ज्याय॥

याद करूं जद बुद्ध नै, तन मन पुलकित होय।
किसो सुनर जग जलमियो, जन जन मंगळ होय॥

देबेनरा मून्दड़ा परिवार
गोश्वारा रोड, पंडित मेघराज मार्ग,
विराट नगर, नेपाल.
फोनः ०९९-२१-५२७६७१
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष 2551, आश्विन पूर्णिमा, 25 अक्तूबर, 2007**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71.** Regn. No. **LII/REN/RNP-46/2006-08**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org